विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है। –अज्ञात

बॉलीवुड: कल, आज और कल

भारत दुनिया का सबसे बड़ा फ़िल्म उत्पादक देश है। ताज़ा आंकड़ों के अनुसार, सभी भारतीय भाषाओं में कुल 1769 फ़ीचर फ़िल्में बनीं, और अगर इनमें से केवल हिंदी फ़िल्मों की बात की जाए तो सन् 2023 में उनकी संख्या भी 248 थी। मुम्बई में निर्मित हिंदी फिल्मों के आधार पर ही वहां के फ़िल्म उद्योग को बॉलीवुड कहा जाता है। यह शब्द दो शब्दों का मिश्रण है:– बॉम्बे और हॉलीवुड। इस अभिव्यक्ति का प्रयोग 1970 के दशक में अंग्रेज़ी पत्रकारों ने अपने गॉसिप कॉलमों में करना शुरु किया था और अब तो इसका चलन इतना ज़्यादा हो गया है कि इसके अनुकरण पर देश के अन्य क्षेत्रीय फिल्म निर्माण केंद्रों को भी टॉलीवुड, कॉलीवुड, संडलवुड और पॉलीवुड जैसे नामों से जाना जाने लगा है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि आज बॉलीवुड केवल फ़िल्मों का उद्योग न रहकर एक समग्र सांस्कृतिक तंत्र का आकार ले चुका है। इसमें हमारी आशाएं, आकांक्षाएं, पूर्वाग्रह, राष्ट्रवाद, उपभोक्तावाद, नैतिकता सब सिमट आए हैं। इसकी विकास यात्रा भी कम रोचक नहीं है। जो हिंदी फ़िल्में कभी देश की स्वाधीनता की आवाज़ बनीं, फिर उन्होंने आदर्शों के सपने दिखाए, सपनों के पूरा न होने पर विद्रोह को वाणी दी, वे ही फ़िल्में नव उदारवाद की राह से गुज़रते हुए आज बाज़ार की चकाचौंध में जा फंसी हैं।

आज़ादी के तुरंत बाद के दो दशकों में जैसी फ़िल्में बनीं उनके आधार पर उस काल खण्ड को हिंदी सिनेमा का नैतिक स्वर्ण काल कहा जा सकता है। बस आप राज कपूर, गुरुदत्त और बिमल रॉय के नाम याद कर लें, आपको याद आ जाएगा कि इनकी फ़िल्मों में क्रमशः समाजवादी स्वप्न, कलाकार की पीड़ा और विडम्बना, तथा ग्रामीण भारत का प्रामाणिक यथार्थ कैसे चित्रित हुए थे। उस काल में सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं था, वह आत्मालोचन भी था। तब शैलेंद्र और साहिर जैसे गीतकार थे जिनके शब्द शास्त्रीय और लोक संगीत का साथ पाकर ऐसे अमर हुए कि हम आज भी उन्हें गुनगुनाते हैं। असल में उस काल का सिनेमा एक सांस्कृतिक विद्यालय था।

लेकिन आज़ादी के दो दशक बीतते न बीतते हमारे सपने टूटने लगे। हिंदी कहानी में नई कहानी के नाम से मोहभंग के स्वर गूंजे तो हिंदी सिनेमा में सामाजिक असंतोष ने व्यवस्था से टकराने वाले एंग्रीयंगमैन के रूप में अभिव्यक्ति पाई। अमिताभ बच्चन का उभार जैसे उस समय की राजनीतिक निराशा और बेरोज़गारी का सिनेमाई अनुवाद था। असल में सिनेमा का यह बदला हुआ रूप उस भारत का प्रतिबिम्ब था जो अपने सपनों के टूटने और आदर्शवाद के पराजित होने से हताश होकर प्रतिरोध की नई भाषा सीखना शुरु कर रहा था।

और इसके बाद आया सन् 1990 के बाद का आर्थिक उदारीकरण। इसने तो जैसे बॉलीवुड के पूरे व्यक्तित्व को ही बदल कर रख दिया। भारत की मध्यमवर्गीय आकांक्षाएं स्विटज़रलैण्ड की हसीन वादियों में जा पहुंची। शाहरुख ख़ान के रोमांस और करण जौहर की पारिवारिक भव्यता ने एक ऐसे भारत को रचा जो आर्थिक रूप से उभर रहा था और भावनात्मक रूप से ग्लोबल हो जाना चाह रहा था।

और यही वह समय भी था जब बॉलीवुड पूरीतरह बाज़ार की गिरफ़्त में आ गया। अब फ़िल्में एक कलात्मक निर्मिति या सांस्कृतिक वक्तव्य न रहकर प्रोडक्ट बन गईं। इसके बाद जैसे-जैसे तकनीकी बदलाव आते गए, बॉलीवुड और अधिक बदलता गया। सिंगल स्क्रीन थिएटर मल्टीप्लेक्सों द्वारा विस्थापित कर दिए गए, और इसने हमारे दर्शक समूह को भी सीधे-सीधे दो वर्गों में बांट दिया। महानगरों के समृद्ध दर्शकों के लिए अलग तरह की फ़िल्में बनने लगीं तो कस्बों के अपेक्षाकृत छोटी जेब वाले दर्शकों के लिए अलग फ़िल्में बनने लगीं। फिर आई डिजिटल तकनीक और वीएफएक्स की चमत्कारी दुनिया। इन्होंने फ़िल्मों के दृश्य वैभव को तो खूब बढ़ाया लेकिन इसकी क्षति पूर्ति करने के लिए कथा की गहराई की बलि दे दी गई। इसके बाद आए ओटीटी के दौर ने एक हद तक मल्टीप्लेसों को भी निस्तेज किया। फ़िल्मों पर से बॉक्स ऑफिस का दबाव कम हुआ, लोग अपने कमरों में बैठ कर ही फ़िल्मों का आनंद लेना पसंद करने लगे। परिणामतः छोटे शहरों का कहानियों और नए अभिनेताओं को भी मंच मिला। लेकिन इस नए आए माध्यम ने सेंसर को भी चुनौती दी। फ़िल्मों में नग्नता, अश्लीलता, हिंसा और अभद्र भाषा का खुलकर प्रयोग होने लगा।

बायोपिक की बाढ़ बताती है कि हम मिथकों और महापुरुषों की पुनर्स्थापना के दौर में हैं, और इधर इस सोच में राष्ट्रवाद का जो ज़ोरदार तड़का लगा है उसने जैसे पूरे बॉलीवुड को दो भागों में बांट दिया है। भारतीय राजनीति का चालू विमर्श जैसे बॉलीवुड पर भी हावी हो गया है। राहत की बात यह है कि ऐसी प्रचारात्मक फ़िल्मों को दर्शकों ने सिरे से नकार कर अपनी परिपक्वता का परिचय दिया है।

नए आए ओटीटी ने जहां छोटे बजट वाले निर्माताओं के लिए नए दरवाज़े खोले हैं वहीं इन्होंने पारंपरिक निर्माताओं के सामने भी बाज़ार में टिके रहने की चुनती पेश की है। परिणामतः वे भी कथा और चित्रण में नए प्रयोग करने को प्रेरित हुए हैं। इधर बहुत सारी ऐसी फ़िल्में आई हैं जिन्होंने विचार और दृश्य भाषा में नई ज़मीन तोड़ी है।

इधर हमारी फ़िल्मों में बायोपिक और राष्ट्रवाद का एक नया दौर आया है। बायोपिक की बाढ़ बताती है कि हम मिथकों और महापुरुषों की पुनर्स्थापना के दौर में हैं, और इधर इस सोच में राष्ट्रवाद का जो ज़ोरदार तड़का लगा है उसने जैसे पूरे बॉलीवुड को दो भागों में बांट दिया है। भारतीय राजनीति का चालू विमर्श जैसे बॉलीवुड पर भी हावी हो गया है। राहत की बात यह है कि ऐसी प्रचारात्मक फ़िल्मों को दर्शकों ने सिरे से नकार कर अपनी परिपक्वता का परिचय दिया है। यह एक नई चीज़ है कि इधर हमारी फ़िल्में केवल कलात्मक अभिव्यक्ति न रहकर वैचारिक संघर्ष का मैदान भी बनने लगी हैं। बाकायदा फ़िल्में के बहिष्कार के आंदोलन चलाए जाने लगे हैं। इस तरह के आंदोलनों के मूल में प्रायः सत्ता का समर्थन या उसके विरोध के मुद्दे होते हैं। न केवल फ़िल्मों के, उनसे जुड़े लोगों, विशेष रूप से अभिनेताओं के बहिष्कार के आंदोलन भी चलाए जाने लगे हैं, और इन आंदोलनों के मूल में बहुत बार फ़िल्में न होकर उन कलाकारों की वैचारिकता भी होती है।फ़िल्मों की छोटी-छोटी बातों पर उपद्रव और तोड़ फोड़ भी होने लगी है, जो चिंता की बात है।

गीत-संगीत हिंदी फिल्मों का अभिन्न अंग है। ऐसी अनगिनत फ़िल्में याद की जा सकती हैं जिनका प्राण उनका संगीत ही था। फ़िल्म भले ही पिट गई हो, संगीत अमर हुआ। हमारे बहुत सारे कलाकार और उन्हें वाणी देने वाले गायक एक दूसरे के पर्याय ही बन गए थे। जैसे राजकपूर-मुकेश, राजेश खन्ना-किशोर कुमार। अब स्थिति बदल गई है। एक ही अभिनेता के लिए अनेक पार्श्व गायकों की आवाज़ काम में लिया जाना अपवाद नहीं रह गया है। असल में अब संगीत फ़िल्म की आत्मा न रहकर केवल प्रोमोशनल उपकरण बना कर रख दिया गया है। एक गाना आता है चार दिन चलता है फिर उसका कोई अता-पता नहीं रह जाता। कालजयी गीत-संगीत का युग जैसे बीत चुका है। संगीत अब सुकून नहीं देता। भारी-भरकम ऑर्केस्ट्रा और धूम धड़ाका – जैसे यही संगीत की नई परिभाषा है। और गीत? उसकी तो बात न ही की जाए तो बेहतर है। वैसे भी शोर में गीत सुनाई किसे देता है?

इधर दक्षिण भारत की हिंदी में डब की हुई अनेक फ़िल्मों ने बाज़ार पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इनकी वजह से एक नया शब्द पैन इण्डियन चलन में आया है। इस बात का सकारात्मक पक्ष तो यह है कि भाषाओं की सीमाएं टूट रही हैं और नकारात्मक पक्ष यह है कि हिंदी सिनेमा अपनी मौलिकता खोता जा रहा है।

बॉलीवुड का बदलता रूप भारतीय समाज की बदलती चेतना का ही प्रतिबिंब है। यह उद्योग अब तकनीकी रूप से सक्षम, आर्थिक रूप से सशक्त और वैश्विक रूप से महत्वाकांक्षी है। परंतु कुछ सांस्कृतिक प्रश्न अनुत्तिरत हैं। हमें उनके उत्तर तलाश करने हैं। ये प्रश्न हैं: क्या सिनेमा बाजार से ऊपर उठकर अपने समाज की आत्मालोचना करेगा? क्या वह विविधता, असहमति और मानवीय संवेदना को बचाए रख पाएगा? क्या वह इतिहास को उसकी समग्र जटिलता सहित ईमानदारी से प्रस्तुत करेगा, या उसे सरल और सत्ता-समर्थक नारों में बदल देगा? ऐसे और भी अनेक प्रश्न हैं।

इस बात को समझा जाना ज़रूरी है कि बॉलीवुड का भविष्य केवल तकनीक या बजट से तय नहीं होगा; वह इस बात से तय होगा कि वह अपने समय के नैतिक एवं अन्य आवश्यक प्रश्नों का सामना कितनी ईमानदारी से करता है। यदि सिनेमा केवल मनोरंजन रहेगा, तो वह क्षणिक होगा। यदि वह संस्कृति का संवाद बनेगा, तो स्थायी होगा। याद कीजिए अतीत की किन फ़िल्मों को हम याद करते हैं, और क्यों उन्हीं को याद करते हैं!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अजमेर जिले ने रचा इतिहास, ''गीर गाय'' ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई

अजमेर जिले की श्री हरि डेयरी फॉर्म की ''गीर गाय'' ने देशभर में आयोजित विभिन्न पशु मेलों में दूध श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर अजमेर का नाम रोशन किया

अजमेर, (निसं)। अजमेर जिले की श्री हरि डेयरी फॉर्म की गीर गाय ने देशभर में आयोजित विभिन्न पशु मेलों में दूध श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर अजमेर का नाम रोशन किया है। पुष्कर, गंगानगर, आईसीएस राजकोट और जोबनेर में आयोजित प्रतियोगिताओं में इस गाय ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए शीर्ष स्थान हासिल किया।

डेयरी के संचालक गणपत सिंह शेखावत ने बताया कि राजस्थान पशुपालन विभाग के सहयोग से मूलतः गुजरात की गीर नस्ल का संवर्धन किया गया है। सुनियोजित प्रजनन और वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से तैयार की गई इस उच्च गुणवत्ता वाली ब्रीड ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि कृषि और डेयरी क्षेत्र को सशक्त बनाने के उद्देश्य से केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ उठाया जा रहा है। बेहतर नस्ल की गायों के संवर्धन से दूध उत्पादन और गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। आज भारत में तैयार की जा रही उच्च गुणवत्ता वाली नस्लों के बछड़ों को ब्राजील सहित कई देशों में भेजा जा रहा है, जिससे भारतीय डेयरी क्षेत्र की वैश्विक पहचान मजबूत हो रही है।

■ **पुष्कर, गंगानगर, आईसीएस राजकोट और जोबनेर में आयोजित प्रतियोगिताओं में इस गाय ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर शीर्ष स्थान हासिल किया**

शेखावत ने बताया कि अजमेर में विकसित की गई यह उत्कृष्ट नस्ल लगातार दूध प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर रही है। डेयरी संचालकों का मानना है कि मजबूत डेयरी तंत्र के माध्यम से आत्मनिर्भर और सशक्त भारत के लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त किया जा सकेगा।

अजमेर जिले की श्री हरि डेयरी फॉर्म की गीर गाय ने कई प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

अलवर में होली पर दो दशक से निकाला जा रहा है 'सेठ-सेठानी' का स्वांग

अलवर, (निसं)। पहल सेवा संस्थान द्वारा पिछले दो दशक से अलवर शहर में निकाला जाने वाला नानक शाही स्वांग परंपरा पर आधारित सेठ-सेठानी का स्वांग रविवार सुबह ग्यारह बजे काशीराम चौराहा से निकाला गया। वहीं ऊंट पर निकली सेठानी का नागौरी परंपरा का अनोखा स्वांग दिखा। सेठ संग फकीर-मुनीम बही खाते लेकर बाजारों में निकले।

संस्थान सचिव लक्ष्मीनारायण गुप्ता ने बताया कि स्वांग को राजस्थान सरकार के वन में पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा व भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता, डॉ. अनुभव शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। वहीं अध्यक्षता संस्थान अध्यक्ष जितेंद्र गोयल ने की। इससे पूर्व सेठ-सेठानी ने शिव-पार्वती मंदिर में गौरी पूजन किया एवं मुरली मनोहरजी मंदिर में अतिथियों द्वारा आरती कार्यक्रम के उपरांत यह स्वांग निकाला गया।

इस अवसर पर वन में पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने होली की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि पहल सेवा संस्थान द्वारा पिछले दो दशक से लोक कला को जीवित रखने के अंतर्गत यह नानक शाही स्वांग अलवर शहर में निकाला जा रहा है जो अपने आप में एक अनूठी मिसाल है। भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता ने शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि एक और जहां आज सभी आयु वर्ग के लोग टीवी और मोबाइल में व्यस्त हैं, वही लोक कला को जीवित रखते हुए इस तरह के स्वांग का निकाला जाना एक अनूठी परंपरा के साथ-साथ बेहतरीन प्रयास है।

अलवर में नानक शाही स्वांग परंपरा पर आधारित सेठ-सेठानी का स्वांग निकाला गया।

■ **सेठ संग फकीर-मुनीम बही-खाते लेकर बाजारों में निकले, ऊंट पर निकली सेठानी, अलवर में दिखा नागौरी परंपरा का अनोखा स्वांग**

जानकारी के अनुसार यह स्वांग काशीराम चौराहे से प्रारंभ होकर घंटाघर, नगर निगम कार्यालय, होप सर्कस, त्रिपोलिया, जगन्नाथ जी मंदिर, विवेकानंद चौराहा, बस स्टैंड होते हुए शाम चार बजे कंपनी बाग पहुंचा, जहां पर कलाकारों द्वारा फाग उत्सव कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। स्वांग उत्सव कार्यक्रम का संचालन कवि साद राम ने किया। इस दौरान कई लोग मौजूद रहे।

स्वांग में संयोजक सुनील चौधरी, अध्यक्ष जितेंद्र गोयल, सचिव लक्ष्मी नारायण गुप्ता, उपाध्यक्ष मनोज चौहान, भाजपा नेता पंडित जलेसिंह, मंडल अध्यक्ष सतीश यादव, जितेंद्र सैनी, पार्षद सुमन चौधरी, हेतराम यादव, रवि यादव, हरीश अरोड़ा, ललित पवार, चतरसिंह गुर्जर, कुशालसिंह, अमित जोगी, भाविक जोशी, गर्व चौधरी, चेतन, मोहन चौहान, आर्यन यादव, सोनित यादव, धीरज शर्मा आदि उपस्थित रहे।

झुंझुनूं में रंगीलो श्याम फागोत्सव में एक क्विंटल फूलों से होली खेली

झुंझुनूं, (निसं)। फाल्गुन शुक्ल बारस के अवसर पर झुंझुनूं शहर के श्याम मंदिरों में भक्ति और उल्लास का अनूठा संगम देखने को मिला। राणी सती रोड स्थित श्याम मंदिर में रंगीलो श्याम फागोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया।

श्री श्याम चेरिटेबल ट्रस्ट के विनोद कुमार सिंघानिया ने बताया कि फागोत्सव में फतेहपुर की महादेव ढप मंडली ने पारंपरिक राजस्थानी लोक वाद्य ढप, चंग और बांसुरी की मधुर थाप पर धमालों की शानदार प्रस्तुति दी। वहीं जयपुर से आए कलाकारों ने कृष्ण-राधा नृत्य नाटिका से श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण करीब एक क्विंटल फूलों की होली रही। जैसे ही फूलों की वर्षा हुई, मंदिर परिसर भक्तिरस और फाल्गुनी रंगों से सराबोर हो उठा। उपस्थित श्रद्धालु भी फाल्गुनी गीतों और राधा-कृष्ण भजनों पर झूमते नजर आए। इस अवसर पर श्रीश्याम मंदिर का भव्य शृंगार किया गया।

कार्यक्रम में श्री श्याम चेरिटेबल ट्रस्ट के विनोद कुमार सिंघानिया, अग्रवाल समाज समिति के अध्यक्ष गणेश हलवाई, स्टेट जीएसटी के जॉइंट कमिश्नर उमेश जालान, श्री गोपाल गौशाला के अध्यक्ष प्रमोद खंडेलिया, मंत्री प्रदीप पाटोदिया, भाजपा जिला कोषाध्यक्ष नवल खंडेलिया, वरिष्ठ अधिवक्ता संजय शर्मा और रितेश सिंघानिया सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। देर रात तक चले इस आयोजन ने होली के मौसम की रौनक को और बढ़ा दिया। पिछले दो दिनों से शहर में लगातार फाल्गुनी कार्यक्रमों का दौर जारी है और हर ओर ढप, चंग व धमाल की सुरीली गूंज सुनाई दे रही है। इस मौके पर सीए पवन केडिया, अशोक केडिया नीटू, अनूप गाडिया, श्रीकांत पंसारी, पूर्व पार्षद प्रमोद जानूं, अंकुर टीबड़ेवाला, सीए लोकेश अग्रवाल, रघुनाथ प्रसाद पोद्दार, कैलाशचंद्र सिंघानिया, संजय नांगलिया, राजकुमार सिंघानिया, पवन कुमार केजड़ीवाल, रमाकांत मोदी, रोमी रमन पंसारी, सहित महिलाएं एवं बच्चे उपस्थित थे।

कलाकारों ने कृष्ण-राधा नृत्य नाटिका से श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया।

■ **फागोत्सव में फतेहपुर की महादेव ढप मंडली ने पारंपरिक राजस्थानी लोक वाद्य ढप, चंग और बांसुरी की मधुर थाप पर धमालों की शानदार प्रस्तुति दी**

डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण

अलवर, (निसं)। मालाखेड़ा उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत कलसाड़ा गांव में रविवार को संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण किया गया। अंबेडकर स्मार्ट समिति द्वारा आयोजित इस समारोह में क्षेत्रभर से बड़ी संख्या में समाजबंधुओं और जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक जयराम जाटव थे। ग्रामीणों और जाटव समाज के लोगों ने ढोल-नगाड़ों, पुष्प वर्षा और साफा पहनाकर उनका स्वागत किया।

पूर्व विधायक जयराम जाटव ने डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत के सामाजिक न्याय का शिल्पकार बताया। उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने देश को संविधान देकर हर वर्ग को समान अधिकार दिलाए। उन्होंने शिक्षा, समानता और अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए समाज के वंचित वर्गों को नई दिशा प्रदान की। जाटव ने डॉ. आंबेडकर के जीवन संघर्ष पर भी प्रकाश डाला। समारोह में भाजपा सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी दी गई। इस दौरान समाज को शिक्षा और संगठन के माध्यम से आगे बढ़ने का आव्हान किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष मूल चंद डीगवाल मालाखेड़ा प्रधान वीरवती जाटव, उमरैण प्रधान दौलतराम जाटव सहित कई भाजपा नेता, जनप्रतिनिधि और अन्य नागरिक उपस्थित थे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 2 मार्च, 2026

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, आश्लेषा नक्षत्र प्रातः 7:52 तक, अतिगंड योग दिन 12:19 तक, वणिज करण सायं 5:56 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 7:52 से सिंह राशि में संचार करेगा।

गृह स्थितिः सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग प्रातः 7:52 तक है। भद्रा सायं 5:56 से आरम्भ होगी। आज चान्द पूर्णिमा व्रत है। होलिका दहन रात्रि 2:38 से 4:38 के मध्य करना श्रेष्ठ रहेगा। आज छुताशिनी पूर्णिमा, माघी मासम है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 8:20 तक, शुभ 9:47 से 11:13 तक, चर 2:05 से 3:32 तक, लाभ-अमृत 3:32 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:03, सूर्यास्त 6:15

मेष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कर्क
व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। यात्रा में सावधानी रखना अच्छा रहेगा।

सिंह
मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कन्या
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।